IMPACT FACTOR 7.50 (SJIAI)

BIHAR SHODH SAMAAGAM

Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 2, April-june, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.19711474

ISSN : 3048-6971

फंतासी जाल में आज का युवा : दशा एवं दिशा

गोरधन राम
शोधार्थी
शिक्षा संकाय
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, जोधपुर

बेरोजगारी की मार कहे या फिर महंगे होटलों में खाना खाने का शौक अच्छे ब्राडेंड कपड़े पहनने की लालसा कहे या फिर चाहत पूरी करने की जिद इन सभी कारणों से युवा वर्ग में बढ़ रही अपराध की प्रवृत्ति निःसंदेह चिंताजनक है। युवाओं की बेलगाम हरकतें यथा लूट, डकैती, नकबजनी, चोरी, बलात्कार, हत्या जैसे अपराध ग्लैमर्स की चकाचौंध में अपना भविष्य बर्बाद कर रहे है। नशा भी युवाओं को अपराध के दलदल में धकेल रहा है। भले–बुरे की समझ के अभाव में मासूम युवा बड़े आपराधिक बदमाश के चंगूल में फंसते जा रहे है ऐसे आपराधिक प्रवृत्ति के लोग उनकी मासुमियत का फायदा उठा रहे हैं और कम समय में बहुत कुछ पाने की लालसा दिखाकर उनसे अपराध करवा रहे है परिणामस्वरूप मानवीय मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। युवा वर्ग अति महत्वाकांक्षी एवं अग्रेसिव होते जा रहे है। वर्तमान युवा इनपटस कंट्रोल भी नहीं हिचक रहे है जिससे वे अपराध करने से भी नहीं चुकते यही वजह है कि उनकी आपराधिक गतिविधि में संलिप्तता ज्यादा हो रही है। जहां एक ओर प्रत्येक माता–पिता अपनी संतान से उम्मीद लगाए बैठे है कि उनका बेटा एक दिन पढ़–लिखकर अफसर बनेगा और घर की मुसीबतें दूर करेगा तथा बुढ़ापे का सहारा बनेगा। इस आस में अभिभावक अपने बच्चों के भविष्य को संवारने के लिए अपने जीवन भर की मेहनत की कमाई उन पर लगा रहे हैं वहीं दूसरी ओर उनके बच्चे पाश्चात्य एवं भौतिकवादी संस्कृति के फंतासी जाल में फंसकर अपराध करने लग गया है जिससे माता–पिता के सपने चकनाचूर हो रहे हैं। युवा की अतृप्त महत्वाकांक्षाएं अराजक लोगों की संगति में डालकर उसे अपराध के लिए बाध्य करती है। लड़कियों एवं महिलाओं से छेड़खानी, बलात्कार, लूटपाट, चोरी आदि से युवा के कुंठित मन से एकबारगी नकारात्मक सुख महसूस कराता है और एक स्टार की भाँति माहौल बनाने में लगा रहता है यथा वह अपने साथियों के साथ एक डॉन की माफिक गैंग बनाना, मारपीट करना, युवतियों को प्रभावित करना आदि। सवाल यह है कि किस प्रकार इन आक्रामक एवं बुरी प्रवृत्ति से युवाओं को छुटकारा दिलाया जाए?

आवश्यकता है युवा के सही परवरिश एवं संस्कारों की। इस हेतु सर्वप्रथम हम अपने ही घर में झांककर देखे कि हम अपने बच्चों को अच्छा साहित्य पढ़ने हेतु प्रेरित कर रहे है? क्या हमारे घर–परिवार में शास्त्रीय संगीत की स्वर लहरियां गूंजती है? क्या हमने अपने बच्चों को किसी सामाजिक भलाई के कार्य से जोड़ा है? क्या हम अपने बच्चों को धर्म, संस्कृति एवं संस्कार की गूढ़ मानवीय विचारधाराएं सिखायी है? क्या हमने इस बात का पता लगाया है कि हमारे घर का एवं बाहर का वातावरण कैसा है? हमारे बच्चे के संगी–साथी कौन है? हमारा बच्चा किनके साथ घूल–मिल रहा है? इन सबको समझते हुए हमें अपने बच्चों के लिए ऐसी संवेदनशील व्यवस्था का निर्माण करना होगा जो सर्वप्रथम हमारे अपने घर से प्रारम्भ होती है। यदि हम अपने बच्चे की अच्छी परवरिश कर उन्हें अच्छे संस्कार देंगे साथ ही उन्हें गलत और सही की पहचान का ज्ञान करायेंगे तो निश्चित रूप से हमारा वह अपना सपना साकार हो जायेगा जो सपना हमने अपने बच्चे के लिए संजोया है।

अभिभावक को चाहिए कि वे समस्त दोष केवल वातावरण एवं परिस्थिति को हीं नहीं देवे क्योंकि यदि केवल वातावरण और परिस्थिति में ही दोष होता तो समाज का हर युवा अपराधी और भटका हुआ होता। अभिभावक समाज में व्याप्त उसे नकारात्मक माहौल से युवा को बचाए जो उसके विकास में बाधक है। इस हेतु हमें हम सकारात्मक सोच निर्मित करनी होगी। युवा की ऊर्जा को सही दिशा देनी होगी। चमकती–दमकती भौतिकवादी सुविधाओं से हम युवा को दूर रखे। घर, परिवार एवं समाज की जिम्मेदारी है कि वह युवाओं को समझाएं और अपराध से दूर रखे। उन कारणों को तलाशने का प्रयास करे जो उन्हें गलत व्यवहार करने के लिए उकसाते है। युवाओं के महाविद्यालय से जुड़ी गतिविधियों पर भी नजर रखे क्योंकि सहपाठियों से ईर्ष्या, उपेक्षा, अपेक्षा और प्रतिस्पर्द्धा भी युवा के दिमाग पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। माता–पिता को अपने बच्चों के साथ दूसरों की तुलना नहीं करनी चाहिए उससे बच्चे में हीनभावना उत्पन्न होती है अपितु उसके साथ प्रोत्साहन भरी बातें करनी चाहिए। यथा– तुम बहुत अच्छे हो। तुममें यह प्रतिभा छुपी है। तुम अच्छा कर सकते हो, आदि। प्रोत्साहन भरी बातें बच्चे को सरल एवं सहज बनाती है। बच्चे के साथ संवाद करते रहे, उन्हें अकेला नहीं छोड़े इससे बच्चे का आपके साथ जुड़ाव बना रहेगा और वह आपके साथ हर बात साझा करेगा। बच्चे अपने तरीके से जिंदगी जीना चाहते है अतः बेवजह उनके साथ रोक–टोक नहीं करे अपितु उन्हें पर्याप्त स्पेस देवे।

युवा बच्चे की जिंदगी संवारता है – माता–पिता का प्यार, सबल और दिशा–निर्देश। चूंकि युवा अधिक अग्रेसिव होते है अतः अभिभावक युवाओं की अग्रेसिवता को सकारात्मकता की तरफ मोड़कर उसे प्रोत्साहित करे, इससे युवा बच्चे का व्यवहार सहज एवं संतुलित होता चला जायेगा। युवाओं की अनियमित दिनचर्या भी उसके व्यक्तित्व को कुप्रभावित करती है जैसे – रात को देर तक जगाना, सुबह देर से उठना, इंटरनेट मोबाइल पर उत्तेजक सामग्री देखना, अश्लील साहित्य पढ़ना, फास्टफूड का अधिक सेवन करना, नशा करना, गाली–गलौच करना, झूठ बोलना, चोरी करना आदि जैसी लाइफ स्टाइल उसे नकारात्मक की ओर धकेलती है अतः अभिभावकों को चाहिए कि युवा की इस नकारात्मक जीवन शैली को सकारात्मकता की ओर ले जाए। युवा को नकारात्मकता के रास्तों पर नहीं जाने देवे। इस हेतु उन्हें भरपूर प्यार देवे, उन्हें धैर्यरूपी संबंल प्रदान करे। छल–कपट से पाए गए लक्ष्यों के लिए उन्हें उत्साहित नहीं करे अपितु सही मार्गदर्शन एवं दिशा–निर्देश तथा परामर्श देवे। उसे अच्छा साहित्य पढ़ने की सलाह देवे। संगीत, कला, संस्कृति एवं संस्कार से अवगत कराएं। अभिभावक द्वारा अपने बच्चों के लिए इस प्रकार का किया गया प्रयास निश्चित रूप से उसे अपराधों से एवं फंतासी जाल से दूर रखेगा तथा उसके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होगा।